ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

पाहि माम्। यजुर्वेद 2/16
हे प्रभो! मेरी रक्षा करो।
O God ! Protect me from all sides and in every way.

वर्ष 37, अंक 10 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 20 जनवरी, 2014 से रविवार 26 जनवरी, 2014
विक्रमी सम्वत् 2070 सृष्टि सम्वत् 1960853114
दयानन्दाब्द : 189 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल :aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.orgèaryasandesh

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट की संयुक्त योजना के अन्तर्गत
संस्कृत संस्कृति एवं संस्कारों के उत्थान के लिए आर्यसमाज आनन्द विहार एल ब्लाक, हरि नगर, नई दिल्ली में
गुरु विरजानन्द संस्कृतकुलम् की स्थापना एवं उद्घाटन

संस्कृत चेतन के पुनरुज्जीवन हेतु समारब्ध नवीन प्रकल्प के अन्तर्गत 'गुरु विरजानन्द संस्कृतकुलम् का भव्य उद्घाटन

दिल्ली सभा का यह प्रयास अनूठा – डॉ. धर्मेन्द्र शास्त्री

देवयज्ञ की प्रचण्डाग्नि की दिव्योष्णता के साथ मुख्यातिथि दानवीर महाशय धर्मपाल जी (चेयरमैन एम.डी.एच.), विशिष्टातिथि डॉ. धर्मेन्द्रकुमार (सचिव, दिल्ली संस्कृत अकादमी), अध्यक्ष, आचार्य धर्मपाल आर्य (प्रधान आर्षसाहित्य प्रचार ट्रस्ट) के

संस्कृत भाषा का पुनर्विकास होगा लक्ष्य – ब्र. राजसिंह आर्य

सान्निध्य में संपन्न हुआ। सभामंत्री श्री विनय आर्य के संयोजकत्व में कार्यक्रम बड़ा आकर्षक और मनोरंजक रूप लिया। आचार्य धन्नजय शास्त्री के उद्बोधन ने संस्कृत की अस्मिता पर गंभीरता से सोचने

गुरुकुल के मध्यम से आर्यसमाजो में लगेंगे संस्कृत शिक्षण एवं सम्भाषण शिविर

के लिए समस्त उपस्थित जनता को स्तब्ध कर दिया।

दिल्ली संस्कृत अकादमी के सचिव डॉ. धर्मेन्द्र कुमार ने समुपस्थित जन समूह को संस्कृत के प्रति जागरुक होने का आह्वान किया। महर्षि दयानन्द के ग्रन्थों को अन्दर से तत्त्व से समझने के लिए संस्कृत की आवश्यकता को अपरिहार्य बताया। तथा उद्घाट्यमान 'गुरुविरजानन्द

संस्कृत विश्व की एकमात्र वैज्ञानिक भाषा संस्कृत हमारी धरोहर है। इसे सुरक्षित एवं संरक्षित रखना हमारा दायित्व है, इसे हम अवश्य पूरा करेंगे – धर्मपाल आर्य

संस्कृतकुलम्' को वर्तमान का वास्तविक प्रयास अनुशासित किया एवं हर संभव

पांच वर्ष के 'स्वाध्याय' ने अष्टाध्यायी के सूत्रों का पाठ करके सबको मन्त्र-मुग्ध किया

सर्वकारीय सहयोग हेतु आश्वस्त किया। जे. एन. यू के प्रो. डॉ. सुधीर आर्य ने भी

संस्कृत में संभाषण सुनकर संस्कृत सीखने का लिया आर्यजनों ने संकल्प

दिल्ली सभा, आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट एवं आर्य समाज हरिनगर के त्रिभुजीय प्रयास के अपने वक्तव्य में रेखाकिंत किया। स्थानीय निगम पार्षद श्री यशपाल आर्य ने गदगद स्वर में 'भूरि भूरि प्रशंसा की और कहा यह अंधकार में दीप जलाने जैसा उद्यम है। बिहार आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान गंगा प्रसाद आर्य ने भावुक होकर इस आयोजन की वरीयता को रेखाकिंत किया। आपने दिल्ली के निजी कार्यों को छोड़कर बड़े उत्साहित होकर कार्यक्रम में आए और 11000 रुपये का दान भी दिया।

सभा प्रधान ब्र. राजसिंह आर्य ने संस्कृत की रक्षा हेतु समस्त आर्यसमाजों की सक्रियता पर ध्यान दिलाया एवं संस्कृत विरोधी गतिविधियों को अवरुद्ध कर आगे

संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान आज की आवश्यकता – महाशय धर्मपाल

बढ़ने का परामर्श दिया।

विद्यालंकार ब्रजेश गौतम ने संस्कृत भाषा पाठ्यक्रम के सरकारी अवरोधों पर चल रहे आन्दोलनों की जानकारी दी।

उद्घाटन कार्यक्रम के अध्यक्षीय वक्तव्य में श्री धर्मपाल आर्य ने बड़ी मार्मिक बात कही कि संस्कृत भाषा सरल

आवश्यक भवन निर्माण भी होगा आरम्भ

नहीं, सरलतम है। संस्कृत भाषा मृतभाषा नहीं है, इस विषय का उदाहरण दृष्टान्त देकर स्पष्ट किया। संयोजक ने कार्यक्रम के अध्यक्ष धर्मपाल आर्य के संबद्ध में एक विशेष बात बताई कि उनके पिता ने

छोटे बच्चों के संस्कृत शिक्षण हेतु होंगी साप्ताहिक कक्षाएं

उन्हें संस्कृत का वारिस बनाने का स्वप्न देखा था एवं संस्कृत के प्रति सबको आग्रह

– शेष पृष्ठ 5 पर

विश्व पुस्तक मेले में 25000 लोगों तक सत्यार्थ प्रकाश पहुंचाने का लक्ष्य : आर्यजनों से सहयोगी बनें

यह पुस्तक मेला वैदिक साहित्य प्रचार की दृष्टि से एक ऐसा मंच होता है जहां हर रोज ऐसे व्यक्ति जो आर्यसमाज, महर्षि दयानन्द सरस्वती तथा वैदिक साहित्य से अनजान होता है या बहुत कम जानकारी रखते हैं। उस प्रत्येक व्यक्ति तक इन सबकी जानकारी पहुंचाना ही हमारा उद्देश्य होता है। इसी उद्देश्यपूर्ति हेतु सभा ने आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट के सहयोग से पहली बार **छह स्टाल हिन्दी साहित्य तथा एक स्टाल अंग्रेजी साहित्य के लिए** बुक कराया है तथा कम से कम 25000 लोगों तक सत्यार्थ प्रकाश मात्र 10/- रुपये में पहुंचाने का लक्ष्य निर्धारित किया है। जबकि सत्यार्थ प्रकाश का न्यूनतम मूल्य 50/- रुपये है। आर्ष सहित्य प्रचार ट्रस्ट की ओर से 20/- प्रति पुस्तक का सहयोग दिया गया है। शेष 20/-रुपये का हम आपसे सहयोग चाहते हैं। इससे पहले के पुस्तक मेलों में कुरान और बाइबिल की लाखों प्रतियां नि:शुल्क वितरित की जा रही हैं, यह हम सबके लिए चिन्तन का विषय है। अत: आर्यसमाजें, शिक्षण संस्थान एवं दानी सज्जनों से अनुरोध है कि 20/- रुपये प्रति पुस्तक की दर से 100, 200, 500, 1000 सत्यार्थ प्रकाश हेतु सहयोग राशि प्रदान करें। कृपया सहयोग राशि भी का चैक **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' के नाम भेजें – विनय आर्य, महामन्त्री**

वेद-स्वाध्याय

वीर पुरुष, विद्वान् कैसे हों?

- स्वामी देवव्रत सरस्वती

तृदिला अतृदिलासो अद्रयोऽश्रमणा अशृथिता अमृत्यवः। अनातुरा अजराः स्थामविष्णवः सुपीवसो अतृषिता अतृष्णजः।।ऋग्वेद 10/94/11

अर्थ—हे विद्वानो और वीरो! आप लोग (**तृदिलाः**) दुःखों और दुष्टों को काटने वाले, और (**अतृदिलासः**) स्वयं कभी छिन्न-भिन्न न होने वाले, निराशा से रहित होवो। (**अद्रयः**) ज्ञान देने वाले (**अश्रमणाः**) न थकने वाले (**अशृथिताः**) शिथिलता-रहित (**अमृत्यवः**) मृत्यु से न डरने वाले (**अनातुराः**) रोग-रहित (**अजराः**) बुढापे से रहित (**अमविष्णवः**) प्रवचन कुशल (**सुपीवसः**) सुपुष्ट शरीर (**अतृषिताः**) तृष्णा-लोभ-रहित (**अतृष्णजः**) संयमी, जितेन्द्रिय (**स्थ**) होवो।

विद्वान् या पण्डित के गुण बतलाते हुये कहा है—

पठकाः पाठकाश्चैव ये चान्ये शास्त्रचिन्तकाः। सर्वे व्यसनिनो मूर्खाः यः क्रियावान् स पण्डितः॥

शास्त्रों के पढ़ने-पढ़ाने और चिन्तन करने वाले सभी व्यसनी हैं। जैसे किसी को नशा करने की लत है वैसे ही इनको भी शास्त्रों का व्यसन है। इन्हें मूर्ख ही जानना चाहिये। पण्डित वही है जिसके जीवन में जो वह कह रहा है, वह झलकता दिखाई दे। जिसके प्रवचन करने के स्थान पर उसका जीवन बोले वही पण्डित जानना चाहिये।

इस मन्त्र का देवता **ग्रावाणः** अर्थात् पदार्थ-विद्या और ईश्वर की स्तुति करने वाला विद्वान् है। विद्वानों में किस प्रकार की योग्यता होनी चाहिये इसका विस्तृत वर्णन यह मन्त्र कर रहा है।

१. तृदिलाः अतृदिलासः विघ्न-बाधाओं से भयभीत न होते हुये सभी प्रकार के विघ्नों में साहस के साथ डटे रहना और दुष्ट प्रकृति के लोगों से भी न घबराना यह विद्वानों का पहला गुण है। हम महर्षि दयानन्द जी के जीवन से शिक्षा ले सकते हैं। किसी ने पत्थर फेंके, किसी ने तलवार से प्रहार किया, किसी ने वेश्या को भेजा और किसी ने सर्प फेंका। किसी ने नकली दयानन्द बना उसे गधे पर बिठाकर जुलूस निकाला और किसी ने विष पिलाया। परन्तु धुन के धनी दयानन्द इनसे विचलित नहीं हो सत्य का प्रचार करते ही रहे। ऐसा सम्भव इसलिये हुआ कि वे योगी थे और ईश्वर पर उनका पूरा विश्वास था। विद्वान् को चाहिये कि वह प्रतिदिन योगाभ्यास करे। इससे उसकी आत्मा में बल आयेगा और वह सत्यमार्ग से विचलित नहीं होगा।

२. अद्रयः जैसे मेघ जल की वृष्टि करते हैं वैसे ही पण्डित लोग ज्ञान-पिपासु जनों पर ज्ञानामृत की वर्षा करें। भूले-भटके लोगों को सन्मार्ग दिखलायें। अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करना उनका परम कर्त्तव्य है। इस कार्य में वे अद्रि अर्थात् पर्वत के समान अविचल रहकर ज्ञान का प्रचार-प्रसार करें। जहाँ पर अच्छे उपदेशक नहीं होते वहाँ प्रजा अविद्या-अन्धकार में अपना मार्ग भूल कुमार्ग पर चलने लगती है। उन्हें सन्मार्ग में लाने का दायित्व विद्वानों एवं पण्डित जनों का ही है।

३. अश्रमणाः न थकने वाले। मनुस्मृति में कहा है—

अनभ्यासेन वेदानामाचारस्य च वर्जनात्। आलस्यादन्न दोषाच्च मृत्युर्विप्रान् जिघांसति॥ मनु० ५.४॥

वेद-स्वाध्याय को छोड़ देने, सदाचार का पालन न करने, आलस्य और अन्नदोष के कारण मृत्यु विद्वानों को भी मारना चाहता है। आलस्य या थकान, अति मात्रा में भोजन या गुरु स्वभाव का भोजन करने से होती है। जब अपने कार्य में रुचि और उत्साह हो तब थकान नहीं आती। विद्वानों की दिनचर्या यदि ठीक चलती रहे तो प्रायः उनका शरीर एवं मन स्वस्थ बना रहता है।

४. अशृथिताः शिथिल का अभिप्राय है ढुलमुल स्वभाव का होना। यह भी ठीक है और वह भी ठीक है। **गंगा गये गंगा दास, जमना गये जमना दास।** ऐसे विद्वानों का जो दो नावों में सवारी करते हैं, समाज में आदर-सम्मान नहीं रहता। लोग उन्हें स्वार्थी धन-लोलुप और मान-सम्मान के भूखे समझने लगते हैं। जो सत्यमार्ग से विचलित नहीं होते, उनका सर्वत्र आदर होता है।

५. अमृत्यवः—अद्यैव मरणमस्तु युगान्तरे वा न्याय्यात् पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः=धीर पुरुष न्याय के मार्ग से विचलित नहीं होते चाहे मृत्यु आज हो या कल, वे सत्यधर्म पर अडिग रहते हैं।

६. अनातुराः अजराः रोग और वृद्धावस्था से रहित। स्वस्थ, सुडौल वक्ता का सभा में जो प्रभाव पड़ता है वह सर्वविदित है। स्वस्थ रहने के लिये आहार-विहार का ध्यान और प्रतिदिन व्यायाम, भ्रमण, आसन प्राणायाम का अभ्यास करना आवश्यक है।

७. अमविष्णवः प्रवचन करने में कुशल। प्रवचन करना एक कला है जो कुछों में जन्मजात होती है और कुछ अभ्यास द्वारा उसे सीख लेते हैं। अच्छा वक्ता थोड़ी-सी बात कह कर भी जनता की दृष्टि में नायक बन जाता है और इस कला को न जानने वाले प्रखर विद्वान् द्वारा भाषण दिये जाने पर लोग कोलाहल, हंसी-ठट्ठा करते हैं या उठकर जाने लगते हैं।

८. सुपीवसः सुपुष्ट शरीर वाला। स्वामी दयानन्द जी के विशालकाय और दीर्घ कद काठी के होने से सभा में प्रतिपक्षी आधे तो वैसे ही दब जाते थे। यद्यपि शरीर की प्राप्ति वंश-परम्परा से होती है परन्तु खान-पान और व्यायाम द्वारा उसका विकास किया जा सकता है।

९. अतृषिताः धन-सम्पत्ति या दान-दक्षिणा के प्रलोभन से रहित सन्तोष धन वाले वक्ता का जनता एवं आयोजकों पर अच्छा प्रभाव पड़ता है। दक्षिणा निश्चित कर प्रवचन करने वाले की लोग पीछे से निन्दा करते हैं। वस्तुतः प्रवचन का कार्य साधु-सन्त और वानप्रस्थ लोगों का है। पेशेवर लोगों के इस क्षेत्र में आ जाने से अधिकांश में अप्रतिष्ठा ही हुई है।

१०. अतृष्णजः इसका अभिप्राय संयमी और जितेन्द्रिय होना है। ऐसे लोगों का ही जनता पर प्रभाव पड़ता है। विद्वानों के अतिरिक्त यही गुण शूरवीरों में भी होने चाहियें। जिस समाज या संगठन में उपरोक्त गुणों वाले विद्वान् होंगे वह आगे बढ़ेगा, इसमें सन्देह नहीं।

- क्रमशः

ओ३म्

आर्य पर्वों की सूची : विक्रमी सम्वत् 2070-71 तद्नुसार सन् 2014

क्र. सं.		पर्व का नाम	चन्द्र तिथि	अंग्रेजी दिनांक	दिन
1.		लोहड़ी	पौष शुक्ल,13 वि. 2070	13/01/2014	सोमवार
2.		मकर-संक्रान्ति	पौष शुक्ल, 14 वि. 2070	14/01/2014	मंगलवार
3.		गणतन्त्र दिवस	माघ कृष्ण, 10 वि. 2070	26/01/2014	रविवार
4.		वसन्त-पंचमी	माघ शुक्ल, 5 वि. 2070	04/02/2014	मंगलवार
5.		सीताष्टमी	फाल्गुन कृष्ण, 8 वि.2070	23/02/2014	रविवार
6.	**ऋषि-पर्व**	महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव	फाल्गुन कृष्ण,10 वि.2070	24/02/2014	सोमवार
7.	**ज्योति-पर्व**	शिवरात्रि (ऋषि बोधोत्सव)	फाल्गुन कृष्ण, 13 वि.2070	27/02/2014	गुरुवार
8.	**वीर-पर्व**	पं.लेखराम बलिदान दिवस	फाल्गुन शुक्ल, 3 वि. 2070	14/03/2014	सोमवार
9.	**मिलन-पर्व**	नवसंस्येष्टि (होली)	फाल्गुन पूर्णिमा, वि. 2070	16/03/2014	रविवार
10.		आर्य समाज स्थापना दिवस/चैत्र शुक्ल प्रतिपदा/ नवसम्वत्सर/उगाड़ी/गुड़ी पड़वा/ चैती चांद	चैत्र शुल्क, 1 वि.2071	31/03/2014	सोमवार
11.		रामनवमी	चैत्र शुक्ल, 9 वि. 2071	08/04/2014	मंगलवार
12.		वैशाखी	चैत्र शुक्ल, 13 वि. 2071	13/04/2014	रविवार
13		पं. गुरुदत्त विद्यार्थी जन्मदिवस	बैशाख शुक्ल 13 वि.2071	12/05/2014	सोमवार
14.		हरितृतीया(हरियाली तीज)	श्रावण शुक्ल, 3 वि.2071	30/07/2014	बुधवार
15.	**वेद-प्रचार समारोह**	श्रावणी उपाकर्म-रक्षा बन्धन	श्रावण पूर्णिमा, वि. 2071	10/08/2014	रविवार
16.		हैदराबाद सत्याग्रह दिवस	भाद्रपद कृष्ण, 4 वि.2071	14/08/2014	गुरुवार
17		श्री कृष्णजन्माष्टमी	भाद्रपद कृष्ण, 8 वि. 2071	18/08/2014	सोमवार
18.		विजय दशमी/दशहरा	आश्विन शुक्ल, 10 वि.2071	03/10/2014	शुक्रवार
19.		स्वामी विरजानन्द दण्डी जन्म दिवस	आश्विन शुक्ल, 12, वि. 2071	05/10/2014	रविवार
20.	**क्षमा-पर्व**	दीपावली (ऋषि निर्वाणोत्सव)	कार्तिक अमावस्या, वि. 2071	23/10/2014	गुरुवार
21.	**बलिदान-पर्व**	स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस	पौष शुक्ल 2, वि. 2071	23/12/2014	मंगलवार

नोट : देशी तिथियों में घट-बढ़ होने से पर्व तिथि में परिवर्तन हो सकता है।

- विनय आर्य, महामन्त्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली- 110001

केवल आर्यसमाज ही मनुष्य को ईश्वर से जोड़ता है अन्य नहीं

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की मानव जगत् को सबसे बड़ी देन यह है कि उन्होंने सदियों बाद मनुष्यों के कल्याण के लिए ईश्वर का शुद्ध स्वरूप हमारे सामने प्रस्तुत किया और संसार को निरन्तर ईश्वर से जोड़ने के लिए आर्यसमाज खोलकर, आर्यसमाज को ईश्वरीय ज्ञान का शिक्षक नियुक्त कर दिया और निर्देश दिया कि ईश्वर निराकार है, सर्वव्यापक है। सर्वशक्तिमान है। उसकी कोई आकृति नहीं हो सकती। उसका आभास केवल अन्त:करण में ही हो सकता है।

वर्तमान में विश्व में सभी जगह वेद कथाओं के स्थान पर जगह-जगह गली-गली मोहल्ले में भागवत कथाएं, सत्यनारायण कथाएं माता का जागरण, महाभारत की कथाएं व देवी देवताओं के मन्दिरों में उसी देवता के गीत, जागरण आदि हो रहे हैं जिससे बच्चों से लेकर पढ़े-लिखे व ऊँचे पदों पर आसीन जन इन कृत्यों को प्रभु भक्ति समझ रहे हैं और सबके संस्कारों में यह कथित अन्ध श्रद्धा घर कर गयी है। कथित सन्तों की कथाओं में भी अधिकतर इतिहास होता है। लोग अधिक भीड़ देखकर उधर ही चले जाते हैं। किसी का भी विवेक कार्य नहीं कर रहा है। सत्यता को टूटने परखने का समय किसी के पास नहीं है। इन ऐतिहासिक कथाओं से श्रोता जितनी देर वहाँ उस कार्यक्रम में बैठे रहते हैं, तब तक तो प्रभावित होते हैं किन्तु बाहर निकलकर फिर वही अज्ञान, अन्धकार क्योंकि आध्यात्म ज्ञान आत्मा का विषय है, मन का नहीं। संसार में केवल आर्य समाज ही वेद कथाओं द्वारा व सत्य ईश्वर के भजनों द्वारा व आर्ष साहित्य द्वारा जनता का मार्गदर्शन कर रहा है। एक न एक दिन सारे संसार को वेद के झण्डे के नीचे आना ही पड़ेगा। क्योंकि वेद ईश्वरीय ज्ञान है व ईश्वरीय संविधान है। केवल आर्य समाज ही मनुष्यों को ईश्वर से जोड़ता है। केवल आर्य समाज मन्दिर ही ईश्वर के मन्दिर हैं। जहाँ वैदिक धर्म द्वारा सत्य ईश्वर के दर्शन कराये जाते हैं। बाकी सभी जगह देवी-देवताओं के मृत्यु के बाद उनकी मूर्तियों के मन्दिर हैं।

महर्षि दयानन्द जी ने कहा वेदों में लिखा है कि परमेश्वर निकट से निकट है और इससे निकट कोई हो ही नहीं सकता है। यह निकटता की पराकाष्ठा है। अत: उसे अपने आत्मा के ही निकट जानना पहचानना और खोजना चाहिए।

यदि उसकी प्राप्ति जब होगी तो वह अपनी आत्मा के ही रूप में होगी। वह आत्मा से पृथक किसी को मिल भी नहीं सकता है। इस अपनी आत्मा का कभी अपमान न करें। किसी की कृपा पर जीने वाला भी बने। आत्मा सर्वोपरि है। इसके महत्त्व को न कोई घटा सकता है और न बढ़ा सकता है।

ईश्वर भक्त की पहचान यही है कि यह किसी से कुछ मांगने की अपेक्षा प्रभु पर ही निर्भर रहता है। ईश्वर भक्त की यह परम कसौटी है। ''य: ईश्वर भजते सेवते स: ईश्वर भक्त:'' जो प्रभु से ही मांगता है और किसी से नहीं मांगता वही ईश्वर भक्त है। ईश्वर सबका मालिक है, जिसने सबको जन्म दिया है, ईश्वर को छोड़ अन्य किसी पर विश्वास नहीं करना चाहिए।

ईश्वर का व्याप्य व्यापक सम्बन्ध

ईश्वर प्राप्ति में जैसे कोई गर्म लोहे को पकड़े तो कोई यह नहीं कह सकता केवल अग्नि को पकड़ा है और यह भी नहीं कह सकता कि लोहे को पकड़ा है जिस प्रकार अग्नि और लोहे की एकता है, ठीक उसी प्रकार से ईश्वर और जीव की एकता है। दोनों को व्याप्य और व्यापक नित्य सम्बन्ध हैं। एक की प्राप्ति में दोनों की प्राप्ति होती है। ठीक उसी प्रकार से जीव के आश्रित ईश्वर की प्राप्ति होती है। बिना आत्मज्ञान के ईश्वर का ज्ञान सम्भव नहीं हैं।

महर्षि दयानन्द जी ने संसार को वेदों के आर्ष अर्थों सहित लौटाया। उन्होंने कहा पृथ्वी पर जो भी समस्यायें हैं। उन सबका एक मात्र समाधान वेद में ही सम्भव है। बिना वेदों के कोई समाधान नहीं दे सकता है। क्योंकि वेद से ही सर्वत्र ज्ञान प्रकाश फैला हुआ है। ईश्वर की भक्ति का जो प्रचलन महाभारत काल के बाद इस आर्यव्रत में फैला है। वह मूर्ति पूजा है। क्योंकि मूर्तिपूजा एक सामाजिक बुराई है। जो विष वेल के समान बड़े वेग से बढ़ती है क्योंकि इससे बुद्धि के लिए कोई स्थान नहीं होता है। मूर्ख से मूर्ख व्यक्ति भी मूर्ति पूजन कर सकता है इस प्रकार ईश्वर भक्ति से बहुत दूर कर दिया है।

आर्य समाज केवल वेदों द्वारा मार्ग दर्शन करता है और सत्य ईश्वर का ज्ञान कराता है। महर्षि दयानन्द जी ने लिखा कि वेद का पढ़ना व पढ़ाना ओर सुनना सुनाना सब आर्यों का अर्थात् श्रेष्ठ पुरुषों का परम धर्म है।

वेद कहते है-कि सृष्टि संचालन में तीन मूल तत्त्व हैं, 1. ईश्वर 2. जीव 3. प्रकृति। ईश्वर सच्चिदानन्द, न्यायकारी, अजन्मा है और सृष्टिकर्ता है अर्थात् जीव व प्रकृति द्वारा सृष्टि का संचालन करता है। ईश्वर कर्म फलदाता है। अत: मनुष्य ही अपने सत्कर्मों द्वारा जीवात्मा को मुक्ति द्वार तक ले जाता है।

आज मनुष्यों के अन्त:करण मलिन होते जा रहे हैं। जिसका कारण अश्रद्धा और अज्ञान है। वर्तमान में आर्यसमाज के अतिरिक्त अन्य सभी धर्म सम्प्रदायों ने मानव जगत को ईश्वर से बहुत दूर किया हुआ है और संसार में अराजकता, अनैतिकता, भ्रष्टाचार, व्यभिचार, उग्रवाद का यही कारण है। क्योंकि जड़ पूजा में बुद्धि भी जड़ हो जाती है और मनुष्य को केवल अपना ही स्वार्थ दिखाई देता है। आज की विधा भौतिक स्तर को उठाने और ईश्वर भक्ति व मुक्ति के स्थान पर सांसारिक बन्धनों में फंसाने का माध्यम बन चुकी है।

आर्यसमाज सदियों से मानव मात्र को सत्य ईश्वर से जोड़ने का कार्य कर रहा है। इसके अतिरिक्त अन्य मत मतान्तर जन साधारण को ईश्वर से दूर बहुत दूर करते जा रहे हैं। इसीलिए हमने इस लेख के प्रारम्भ में ही संकेत दिया है कि आर्य समाज ही सम्पूर्ण मानव जाति का ईश्वर से जोड़ने का कार्य कर रहा है, एक प्रकार शिक्षक है।

महाभारत काल के बाद इन तथा कथित सम्प्रदायों ने मनुष्यों को सत्य मार्ग से भटकाने के अतिरिक्त कुछ नहीं किया है और उसका परिणाम, भारत सदियों पराकान्त रहा है और आज भी मनुष्य बिना वेद ज्ञान के भटक रहा है।

अत: आर्यसमाज सारे संसार के मनुष्यों को आग्रह करता है कि आइए आर्य समाज जैसे सर्वश्रेष्ठ, वेदमार्गी संगठन से जुड़िए और ब्रह्म ज्ञान, सृष्टिक्रम व विज्ञान के वेदानुकूल ज्ञान से परम ब्रह्म, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान, निराकर ईश्वर से जुड़िये और सच्चे सुख को प्राप्त कर मोक्ष प्राप्ति की ओर बढ़िये।

- पं. उम्मेद सिंह विशारद
गढ़ निवास मोहकमपुर, देहरादून

..... महर्षि दयानन्द जी ने कहा वेदों में लिखा है कि परमेश्वर निकट से निकट है और इससे निकट कोई हो ही नहीं सकता है। यह निकटता की पराकाष्ठा है। अत: उसे अपने आत्मा के ही निकट जानना पहचानना और खोजना चाहिए। .....

..... यदि उसकी प्राप्ति जब होगी तो वह अपनी आत्मा के ही रूप में होगी। वह आत्मा से पृथक किसी को मिल भी नहीं सकता है। इस अपनी आत्मा का कभी अपमान न करें। किसी की कृपा पर जीने वाला भी बने। आत्मा सर्वोपरि है। इसके महत्व को न कोई घटा सकता है और न बढ़ा सकता है। .....

..... ईश्वर भक्त की पहचान यही है कि यह किसी से कुछ मांगने की अपेक्षा प्रभु पर ही निर्भर रहता है। ईश्वर भक्त की यह परम कसौटी है। ''य: ईश्वर भजते सेवते स: ईश्वर भक्त:'' जो प्रभु से ही मांगता है और किसी से नहीं मांगता वही ईश्वर भक्त है। ईक्श्वर सबका मालिक है, जिसने सबको जन्म दिया है, ईश्वर को छोड़ अन्य किसी पर विश्वास नहीं करना चाहिए। .....

आर्य सन्देश के वार्षिक सदस्यों की सेवा में

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मुखपत्र **साप्ताहिक "आर्यसन्देश"** के समस्त वार्षिक सदस्यों से निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क यथाशीघ्र सभा कार्यालय को भेज दें जिससे कि उन्हें नियमित रूप से आर्यसन्देश भेजा जाता रहे। जिन सदस्यों के शुल्क तीन वर्षों से अधिक बकाया हों उनसे निवेदन है कि वे अपना आजीवन शुल्क भेजें।

इस कार्य को यथाशीघ्र प्राथमिकता से करें अन्यथा **फरवरी, 2014 मास से आर्यसन्देश भेजना बन्द कर दिया जाएगा। वार्षिक शुल्क 250/- रुपये** तथा **आजीवन शुल्क 1000/- रुपये** है।

पत्र व्यवहार के लिए सदस्य संख्या तथा पिनकोड अवश्य लिखें। - ***सम्पादक***

भूल सुधार/स्पष्टीकरण : आर्य सन्देश के गत अंक 30 दिसम्बर, 2013 से 5 जनवरी, 2014, में पृष्ठ 2 पर प्रकाशित में दानदाताओं की उल्लिखित श्री भारत भूषण गुप्ता जी के सम्बन्ध में स्पष्ट किया जाता है कि इस सूची में क्रम सं. 7 पर दी गई राशि आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू-कश्मीर द्वारा प्रदान की गई है न कि श्री भारत भूषण गुप्ता जी द्वारा। - सम्पादक

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा
के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

सार्वदेशिक सभा के निर्देशन में मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के सहयोग से दिल्ली सभा के अन्तर्गत

छठा आर्य परिवार युवक-युवती परिचय सम्मेलन इन्दौर में सम्पन्न

जातिवाद के जहर को समाप्त करने में सहायक होंगे ये आयोजन - प्रकाश आर्य

जातिवाद से उपर उठकर आर्य विचारधारा के आधार पर आर्य परिवार युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन मध्य भारत में पहली बार इंदौर महानगर की आर्य समाज मल्हारगंज में सम्पन्न हुआ।

कोटा से कार्यक्रम आयोजित कराने अर्जुनदेव चड्ढा के साथ गए रामप्रसाद याज्ञिक व अरविन्द पाण्डेय ने कोटा पहुंचकर जानकारी देते हुए बताया कि कार्यक्रम का शुभारंभ अतिथियों श्री प्रकाश आर्य, मंत्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा व मंत्री मध्यभारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा, श्री अर्जुनदेव चड्ढा (राष्ट्रीय संयोजक आर्य परिचय सम्मेलन), डॉ. दक्षदेव गौड़ (प्रधान आर्य समाज इंदौर), डॉ. विनोद आहलुवालिया (मंत्री) ने दीप प्रज्ज्वलित कर एवं प्रार्थना मंत्रों के उच्चारण से हुआ।

श्री प्रकाश आर्य ने सभा में उपस्थित सभी लोगों को सम्बोधित करते हुए कहा कि आर्य समाज के अतिरिक्त परिवारों में जन्म लेने वाला बालक जन्म से ही उस बात को मानता है जिस बात को उसके माता-पिता मानते रहे हैं। इसी प्रकार यदि आर्य समाज में विवाह संस्कार वैदिक धर्मियों के मध्य होने लगेंगे तो उनकी संतान भी वैदिक धर्मी ही होगी। इसी बात को ध्यान में रखते हुए परिचय सम्मेलन प्रारंभ किया। जिसमें अच्छे परिवार सामने आये हैं। यह संगठन के लिए शुभसूचक है। अन्य प्रांतों में भी इस प्रकार के सम्मेलन करने का आग्रह किया जा रहा है।

कार्यक्रम के राष्ट्रीय संयोजक अर्जुनदेव चड्ढा ने कहा कि आर्य परिवारों को जोड़ने के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आर्य परिवार युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन का मंच तैयार किया गया है जिसके माध्यम से आज इंदौर में छठा सम्मेलन सम्पन्न हुआ। श्री चड्ढा ने कहा कि एक ही छत के नीचे जाति बंधनों से हटकर वैदिक विचारधारा पर आधारित परिवारों को अपने विवाह योग्य पुत्र-पुत्रियों के लिए अच्छे रिश्ते देखने को चुनने को मिलते हैं। श्री चड्ढा ने कहा कि आज हुए सम्मेलन में हमारे पास 70 युवक-युवतियों का रजिस्ट्रेशन पहले से ही था तथा कार्यक्रम स्थल पर 24 रजिस्ट्रेशन तत्काल हुए हैं और आज के सम्मेलन में लगभग 32 परिजनों ने आपसी बातचीत कर रिश्ते की बात को आगे बढ़ाया। डॉ. दक्षदेव गौड़ ने स्वागत भाषण में कहा कि यह हमारा परम सौभाग्य है कि सार्वदेशिक प्रतिनिधि सभा तथा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने हम पर विश्वास करते हुए आर्य समाज मल्हारगंज में हमें कार्यक्रम करने की जिम्मेदारी दी। हमारे कार्यकर्त्ताओं ने इंदौर तथा आसपास के नगरों में आर्य परिवारों से सम्पर्क करके इस सम्मेलन में रजिस्ट्रेशन करवाने हेतु प्रेरित किया। उन्होंने बताया कि कार्यक्रम में आए युवक-युवतियों ने मंच पर आकर अपना परिचय दिया। कुछ युवक शरमाए वहीं कुछ युवतियों ने पूर्ण आत्मविश्वास के साथ परिचय दिया। उपस्थित लोगों ने तालियां बजाकर उनका उत्साहवर्धन किया। कार्यक्रम में बाहर से आने वाले अतिथियों व प्रतिभागियों तथा अभिभावकों के ठहरने की व्यवस्था तथा चाय-नाश्ते व भोजन की व्यवस्था आर्य समाज मल्हारगंज द्वारा की गई।

सम्मेलन में भाग लेने हेतु अजमेर, अहमदाबाद, ग्वालियर, इंदौर, चण्डीगढ़, दिल्ली, लश्कर, खरगोन, शिवपुरी, गुडगांव, फरीदाबाद, मेरठ, लखनऊ, रामपुर, अम्बेडकर नगर, नासिक,

- शेष पृष्ठ 6 पर

सातवां परिचय सम्मेलन 2 फरवरी, 2014 को आर्यसमाज डी ब्लाक विकासपुरी नई दिल्ली में आयोजित होगा

।। ओ३म्।।

गुरुकुल के आयुर्वेदिक उत्पाद खरीदें गुरुकुल परम्परा को आगे बढ़ाएँ

महाशय धर्मपाल
अध्यक्ष, गु.कांगड़ी फार्मेसी

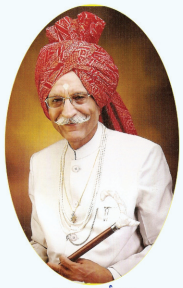

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी
आपकी अपनी फार्मेसी

प्रमुख उत्पाद
गुरुकुल चाय, पायोकिल मंजन, च्यवनप्राश, मधुमेह नाशिनी, मधु (शहद), ब्राह्मी रसायन, आंवला रस, आंवला कैंडी, गुरुकुल शिलाजीत, द्राक्षारिष्ठ, रक्त शोधक, अश्वगंधारिष्ठ, सफेद सुरमा, गुलकन्द, महाभृंगराज तैल

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार, पो. गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार (उत्तराखण्ड) -249404
फोन - 0134-416073, 09719262983 (व्यवसायाध्यक्ष)

आर्यजगत में एक अनूठी, दुर्लभ व अलौकिक घटना की पुनरावृत्ति

स्व. श्रीमती बृजलता आर्य के देह-दान ने महर्षि दधीचि का स्मरण कराया

स्व. श्रीमती बृजलता आर्या जी

आर्यसमाज के सर्वोच्च संगठन '**सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा**' के उपप्रधान एवं गुजरात प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य की धर्मपत्नी श्रीमती ब्रजलता आर्य का 8 जनवरी 2014 को अहमदाबाद में दु:खद निधन हो गया। उन्होंने अपने पूज्य श्वसुर स्व. श्री बंसीधरजी अग्रवाल के पद चिह्नों का अनुसरण करते हुए मरणोपरान्त चक्षुदान एवं देह-दान की इच्छा व्यक्त की थी। तदनुसार श्रीमती ब्रजलता आर्या के पार्थिव शरीर को 9 जनवरी 2014 को सम्पूर्ण वैदिक अनुष्ठान के पश्चात् अहमदाबाद के सिविल अस्पताल के मेडीकल कालेज को शोधकार्य हेतु ससम्मान अर्पित कर दिया गया।

सम्पन्न परिवार की एक नारी द्वारा मरणोपरान्त किये जाने वाले इस उत्सर्ग से सम्पूर्ण आर्यजगत में एक अद्‌भुत प्रेरणा का संचार हुआ है। स्व. श्रीमती ब्रजलता आर्य के देह-दान के समाचार पाकर न केवल भारत के अपितु अमेरिका, कनाडा, हॉलैन्ड, इंग्लैंड आदि अनेक देशों के आर्यजन हतप्रभ हैं और इस अनूठे कार्य के लिये नतमस्तक हैं। श्रीमती ब्रजलता अत्यन्त मृदुभाषी, दानशील, ममतामयी एवं करुणामयी आर्य महिला थीं। एक आदर्श अर्धांगिनी के रुप में उन्होंने अपने कर्त्तव्यों का आजीवन पालन किया। उन्होंने महर्षि के कार्यों के प्रचार-प्रसार में जीवन पर्यन्त अपने पति का साथ दिया। वे जीवन भर आर्यसमाज से जुड़ी रहीं। शारीरिक कष्ट एवं असुविधा महसूस करते हुए भी सामाजिक कार्यों के लिए उन्होंने अपने पति को सदैव मुक्त रखा।

किसी भी व्यक्ति के उदार एवं महान कार्यों के पीछे सदैव उसकी सहधर्मिणी की मूक तपस्या छिपी होती है। वे न केवल अपने पति श्री सुरेशचन्द्र आर्य की प्रेरणा बनीं अपितु उन्होंने स्वयं भी संगठन एवं आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार में सहयोग के लिये दिल्ली सहित विदेशों में भी आयोजित होने वाले अन्तर्राष्ट्रीय आर्यमहासम्मेलनों आदि में भाग लेकर भारत का एवं गुजरात प्रान्त का प्रतिनिधित्व किया। वे हमेशा सभी धार्मिक एवं सामाजिक कार्यों में उत्साहपूर्वक भाग लेकर सक्रिय रहती थीं। जीवनभर परोपकार एवं सेवा कार्यों में समर्पित उनका सरल व्यक्तित्व सदैव सभी के लिये प्रेरणा-स्रोत बना रहेगा।

प्रभु के प्रति अनन्य श्रद्धा रखते हुए एक आदर्श एवं करुणामयी नारी के रुप में उन्होंने अपने परिवार को किस प्रकार संस्कारित एवं पोषित किया इसका ज्वलन्त उदाहरण उनकी मेधावी एवं सुशील पुत्रवधू श्रीमती जया आर्य के निम्नलिखित विचारों से एवं उनकी काव्य रचना से स्पष्ट झलकता है- 'मां से भी अधिक ममता प्रदान करने वाली मेरी सासुजी स्व. श्रीमती ब्रजलताजी आर्य एक सच्ची पुण्यात्मा थी। ईश्वर पग-पग पर उनकी अग्नि-परीक्षा लेते रहे। वह साहस के साथ डटी रहीं। छोटी-सी उम्र में विवाह हुआ। एक बड़ा सारा परिवार मिला जिसमें जिम्मेदारियों का अन्त न था। परन्तु उन्होंने बखूबी न सिर्फ उनको निभाया बल्कि पूरे परिवार का दिल भी जीत लिया। पन्द्रह वर्ष तक वे असाध्य बीमारी से लड़ती रहीं मगर इच्छा शक्ति को कमजोर नहीं होने दिया। चेहरे पर अन्तिम समय तक उन्होंने अपनी सौम्य मुस्कान बनाये रखी। हमारी आंखे उनकी स्नेहमयी एवं उदारमयी छवि को देखने के लिये सदैव तरसती रहेंगी। वे सहजता की, ममता की, सहिष्णुता की, धीरज की एवं सरलता की साक्षात मूर्ति थीं। कितने ही दिव्य गुणों से सजा हुआ था उनका व्यक्तित्व। बहुत बड़ी-बड़ी बातें नहीं, बहुत बड़े-बड़े वादे नहीं बल्कि जीवन के छोटे-छोटे कार्यों को ही सहजता, सरलता व प्रेम से करना उनकी खासियत थी। जितने भी लोग उनके सम्पर्क में आते वे उनकी सहज मुस्कान और सरल व्यक्तित्व से प्रभावित हुए बिना न रहते थे और वे जितने भी लोगों के सम्पर्क में आती थीं, सभी के लिए मदद करने की इच्छा व ममता उनके अन्तर में समाहित रहती थी। ऐसी दिव्यात्मा सभी पुत्रवधुओं को प्राप्त हो, ऐसी प्रभू से कामना करती हुए, पूज्या मां के चरणों में निम्न भाव-प्रसून अर्पित कर रही हूँ'-

एक-एक फूल पिरोया तुमने,
बड़े जतन से बड़े यतन से,
बनाई सुन्दर जीवन-माल,
तुमको प्रणाम, तुमको प्रणाम।
जीवन धूप में जब त्रस्त होते,
तब-तब स्नेह छाया दी तुमने,
बनकर एक तरुवर विशाल,
तुमको प्रणाम, तुमको प्रणाम।
तन का सुख न होने पर भी,
बन कर सजग प्रहरी तुम,
करती रहीं सबकी देखभाल,
तुमको प्रणाम, तुमको प्रणाम।
कटु वचनों से तुम दूर सदा,
प्रेम, मधुरता, शीतलता, अपनापन
वाणी में तुमने रखा संभाल,
तुमको प्रणाम, तुमको प्रणाम।

(जया आर्य)

धन्य है वह मां जिसकी पुत्रवधु के ये उद्‌गार एक उत्कृष्ट परिवार के उच्च वैदिक संस्कारों को उजागर करते हैं। इस परिवार ने शोकग्रस्त होते हुए भी पूज्य माताजी का

- शेष पृष्ठ 6 पर

प्रथम पृष्ठ का शेष

किया कि हम भी संस्कृत को किसी भी अंश में अपनी बोलचाल में प्रयुक्त करने में सहर्ष तैयार हैं। यहां तक कि नवें दशक के महाशय धर्मपाल जी ने भी संस्कृत सीखने हेतु अपनी स्वीकृति दे ही दी। पुरोहितों ने अपनी उपस्थिति से आयोजन को गौरवान्वित किया। डॉ. प्रणवदेव आर्य ने सत्यार्थप्रकाश पढ़ने हेतु सबको आहूत किया।

इस अवसर पर निकटस्थ एवं दूरस्थ आर्यसमाजों यथा जनकपुरी सी-3, सागरपुर, आदि अनेक सभाओं से रहे थे।

माता प्रेमलता शास्त्री(महामन्त्री, अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ) में सरकार को संस्कृत के प्रति जगाने पर बल दिया।

गुरुविरजानन्द संस्कृतकुलम् की अधीक्षिका आचार्यानी कुसुमांगी ने संस्कृत को सहजता से अपनाने का कारण बताया। संस्कृतकुलम् के ब्रह्मचारियों ने प्रतिभा प्रदर्शन किया तथा उनकी दादी ने भी संस्कृत संभाषण का उदाहरण प्रस्तुत किया और बताया कि बालकों संस्कृत सिखाने के लिए हम खुद भी संस्कृत बोलते हैं।

- शेष पृष्ठ 6 पर

तथा रविवारीय कक्षा के लिये उन्होंने वाहन व्यवस्था का वचन भी दिया।

आर्यसमाज एल ब्लॉक हरिनगर ने समस्त अतिथियों को ओ३म्पट्टिका से संमानित अभिनन्दित किया।

याज्ञिकमंगलाचरण आचार्य कुँवरपाल शास्त्री जी ने यजमान दम्पती श्रीमती वीणा व श्री धर्मपाल आर्य द्वारा संपन्न कराया। संस्कृत के उत्थान, सम्मान हेतु दिल्ली के विभिन्न आर्यसमाजों से संबद्ध विद्वानों तथा अधिकारी एवं सदस्य सम्मिलित हुए।

गुरुकुल रानी बाग, सैनिक विहार एवं गुरुकुल तिहाड़ के छात्र, जनकपुरी सी-3 से आर्य वीरांगनाएँ कार्यक्रम को आमोदित कर

पृष्ठ 5 का शेष

स्व. श्रीमती बृजलता....

नेत्रदान और देहदान करके समाज के लिये जो प्रशंसनीय और अनुकरणीय कदम लिया है उसके लिये हम उन्हें नमन करते हैं। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि स्व. श्रीमती ब्रजलताजी आर्य के परिवार में पूर्व से ही विद्यमान धार्मिक विचारों को और भी अधिक दृढ़ता प्रदान करें तथा दिवगंत आत्मा को अपनी ममतामयी गोद में स्थान प्रदान करें एवं सम्पूर्ण परिवार को इस दारुण दु:ख को सहन करने की क्षमता प्रदान करें। इस दिवगंत पुणयात्मा की स्मृति ने केवल इस परिवार में अपितु पूरे आर्यजगत में स्थायी रहे, ऐसी कामनाओं के साथ आर्यसन्देश परिवार अपनी हार्दिक सम्वेदना प्रगट करता है।

गुरु विरजानन्द संस्कृत...

द्वार पर लगा ''कृपया पादत्राणम् अत्र स्थापयन्तु'' वाला निर्देशफलम तथा सर्वत्र संस्कृतमय निर्देश एवं भित्तियों (चार्ट) ने सबका ध्यान आकृष्ट किया। संस्कृत के संप्रेषण शक्ति का सबने अनुमान किया कि आखिर संस्कृत गूंगी क्यों हुई?

गुरुविरजानन्द संस्कृतकुलम् की प्रशासनिक समिति का निर्माण हुआ इस समिति में ब्र. राजसिंह (प्रधान) विनय आर्य (मन्त्री-दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा) महेन्द्र सिंह (मन्त्री, आ. स. हरिनगर) विनोद अग्रवाल प्रबन्धक, श्री वीरेन्द्र मल्होत्रा -कोषाध्यक्ष एवं श्रीमती वीणा आर्या (आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट)-सदस्य, एवं श्री दीपक कुकरेजा सदस्य सम्मिलित हैं। गु. वि. संस्कृतकुलम् की प्रधाना श्रीमती सुधा आर्या (रोहिणी) एवं धन्नजय शास्त्री (आचार्य) नियुक्त हुए।

इस अवसर पर संस्कृतमय उद्बोधन हुए। अध्यक्ष एवं अतिथिजन संस्कृत में संबोधन किए। संस्कृत की सोई हुई चेतना जागरित हो रही है। गुरु विरजानन्द ने स्वामी दयानन्द सरस्वती को संस्कृत माध्यम से ही सभी शास्त्र पढ़ाए थे। गुरुदत्त विद्यार्थी ने संस्कृत रक्षा हेतु गुरुकुलों की स्थापना का स्वप्न संजोया था। आज वह साकार होने का सोपान तय हो रहा हैं। संयोजक श्री विनय आर्य ने यह बताते हुए कहा कि आज वही इतिहास दुहरा रहा है यह गुरुविरजानन्द संस्कृतकुलम्।

आर्य समाज, लेखू नगर, त्रिनगर दिल्ली का 54वाँ वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज, लेखू नगर, त्रिनगर दिल्ली का 54वाँ वार्षिकोत्सव 30 दिसम्बर से 5 जनवरी, 2014 तक मनाया गया। इस कार्यक्रम में यज्ञ के ब्रह्मा व प्रवक्ता स्वामी सम्पूर्णानन्द जी सरस्वती के सप्ताह भर विभिन्न विषयों पर प्रवचन तथा पं. कुलदीप आर्य (बिजनोर) के सुमधुर भजन हुए। उपस्थित जन समुदाय ने अपनी भावनाओं को प्रगट करते हुए कहा कि इस प्रकार के कार्यक्रम होते रहने चाहिए जिससे लोगों को जीवन के सुधार की प्रेरणा प्राप्त होती रहे। 1 जनवरी को महिला सम्मेलन में स्वामी इन्द्रवेश वैदिक शोध आश्रम से पधारी कु. प्रवेश तथा पूनम ने कन्या भ्रूण हत्या के विरुद्ध विचार प्रकट करते हुए उपस्थित महिलाओं तथा पुरुषों को इसका संकल्प दिलाया।

इस अवसर पर आर्यसमाज के वरिष्ठ तथा कर्मठ सदस्यों को शाल तथा पुस्तक आदि भेंट देकर सम्मानित भी किया गया। समाज के प्रधान श्री आत्मा प्रकाश कालरा एवं कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री प्रवीण वरमानी जी ने सभी का धन्यवाद किया।

- लक्ष्मी नारायण जिन्दल, मन्त्री

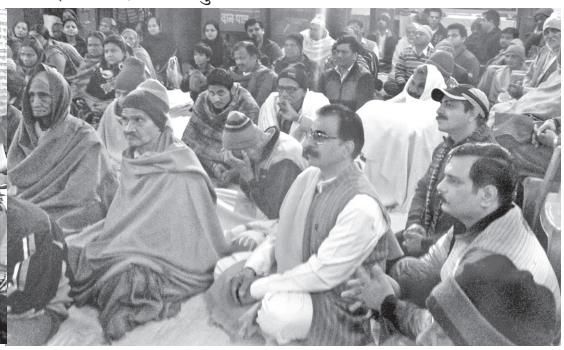

दिल्ली सभा द्वारा प्रकाशित

स्वाध्याय प्रेमियों के लिए

365 वेद मन्त्रों का अभूतपूर्व संग्रह : प्रतिदिन एक मन्त्र का हृदय से पाठ करें

वैदिक विनय

20% छूट के साथ मात्र 125/- रुपये में

आर्य समाज श्रीनिवासपुरी का 46 वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज श्रीनिवासपुरी नई दिल्ली का 46वां वार्षिकोत्सव समारोह दिनांक 18 दिसम्बर से 22 दिसम्बर, 2013 तक बड़ी धूमधाम से मनाया गया।

15 दिसम्बर को स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस शोभायात्रा निकाली गयी, जिसका नेतृत्व श्री विनय आर्य महामंत्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने किया।

वार्षिक उत्सव 18 दिसम्बर से शुरू हुआ और प्रतिदिन विभिन्न उपदेशकों द्वारा अलग-अलग विषयों पर प्रवचन दिए। आचार्य संजय शास्त्री ने-जीवन में सुख शान्ति और सहृदयता कैसे पायें? डा. सूर्यदेव शास्त्री ने - ईश्वर की स्तुति प्रार्थना व उपासना, आचार्य वीरेन्द्र विक्रम ने आदर्श गृहस्थ जीवन तथा आचार्य राजू वैज्ञानिक जी ने मानव जीवन में सफलता के उपाय विषय पर अपने उद्बोधन दिए।

मुख्य उत्सव 22.12.13 रविवार का स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस मनाया गया। जिसमें आर्य पब्लिक स्कूल के छात्रों ने रंगा-रंग कार्यक्रम व स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन पर आधारित नाटक का मंचन किया। उसी दिन स्वामी श्रद्धानन्द फिजीयोथैरेपी केन्द्र का उद्घाटन श्री अनिल बंसल (सुप्रसिद्ध योग एवं प्राकृतिक चिकित्सक) जी ने किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्रीमति संध्या बजाज जी (एडवोकेट सुप्रीम कोर्ट)ने की। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री हरमीत कालका (विधायक) थे। समाज के प्रधान श्री ओ. पी. वर्मा जी ने सभी का धन्यवाद ज्ञापन किया। *- सुशील आर्य, मन्त्री*

आर्य समाज सान्ताक्रुज में संगोष्ठी का आयोजन

आर्य प्रतिनिध सभा मुंबई के सौजन्य से वैदिक मिशन मुम्बई की ओर से 22-23 मार्च 2014 को स्वामी प्रणवानन्दजी सरस्वती की अध्यक्षता में आर्य समाज सान्ताक्रुज, मुम्बई में 'ऋषि दयानन्द और उनकी बृहत्त्रयी' के विषय में संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है। जिसमें स्वामी आर्यवेशजी, स्वामी धर्मानन्दजी (उड़ीसा), स्वामी विवेकानन्दजी (मेरठ), विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित रहेंगे।

इस संगोष्ठी में भारत के लगभग पचास संन्यासी, महात्मा एवं वैदिक विद्वान् भाग ले रहे हैं जो ऋषि दयानन्द के व्यक्तित्व और उनके द्वारा रचित ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका एवं संस्कार विधि में वर्णित विषयों की महत्ता, उपयोगिता और इनके प्रचार-प्रसार के विविध उपायों के विषय में गहन चिन्तन करेंगे।

- सन्दीप आर्य, मन्त्री

आर्य परिवार का वर चाहिए

सनाड्य ब्राह्मण, 19 न वम्बर, 1984, सायं 5:20, मुजफ्फर नगर (उ.प्र.), 5'4'' एम.एम.बी.एड,, संस्कारवान, स्वस्थ, सन्दर, शाकाहारी, नौकरीपेशा/उच्च व्यवसायरत सजातीय वर चाहिए। (एक माह के वैवाहिक जीवन के पश्चात् सम्बन्ध विच्छेद हुआ।) ***सम्पर्क सूत्र - 08826026404 सायं 6 से रात्रि 9 बजे तक***

आओ चलें बढ़ाएं कदम : हमारा गुरुकुल हो आत्मनिर्भर

आर्य जनता से निवेदन है कि कन्या गुरुकुल महाविद्यालय देहरादून के पुनरुद्धार में सहयोगी बनें और दिल खोलकर दान दें ताकि हम सब मिलकर गुरुकुल को आत्मनिर्भर बना सकें। कृपया अपनी सहयोग राशि चैक/ड्राफ्ट/मनिआर्डर के रूप में '**कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, देहरादून**' के नाम भेजें।

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय देहरादून के लिए दान देने वाले महानुभावों की सूची

गतांक से आगे -

1. आर्यसमाज हनुमान रोड	एक गाय
2. श्रीमती शकुन्तला आर्या (रोहिणी) एवं श्रीमती शारदा आर्या (सब्जी मंडी)	एक गाय

- क्रमश:

यदि आप यदि आप अपनी दानराशि पर **आयकर छूट** चाहते हैं तो कृपया दानराशि '**सहायक मुख्याधिष्ठता गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार**' के नाम भेजें। कृपया चैक के पीछे 'कन्या गुरुकुल महाविद्यालय देहरादून' हेतु सहयोग अवश्य लिखें।

कन्या गुरुकुल देहरादून के पुनरुद्धार में सहयोगी बनें दिल खोलकर दान दें

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय देहरादून के पुनरुद्धार के लिए आपका सहयोग एवं सदभाव सादर अपेक्षित है। आप निम्न प्रकार अपना सहयोग प्रदान कर सकते हैं। आप चाहें तो गेहूं, चावल, चीनी, तेल, घी, दालें भी दे सकते हैं।

1. एक दुधारु गाय	= 45 हजार रुपये
2. एक मास का सूखा राशन	= 65-70 हजार रुपये
3. एक का दूध व्यय	= 20 हजार रुपये
4. एक मास का सब्जी व्यय	= 20 हजार रुपये
5. पीने के पानी आर. ओ. सिस्टम	= 15-20 हजार रुपये
6. गायों के लिए चारा (एक दिन)	= 2500 रुपये

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस समारोह सम्पन्न

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस एवं अभिनन्दन समारोह 15 दिसम्बर 2013 को आर्य समाज ग्रेटर कैलाश-1 नई दिल्ली-48 में उत्साह के साथ मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ आचार्य वीरेन्द्र विक्रम जी द्वारा यज्ञ से हुआ। यह कार्यक्रम स्व. पं. सत्यदेव जी विद्यालंकार की पुण्य स्मृति में श्रीमती अमृत पॉल व उनके परिवार के सदस्यों द्वारा प्रतिवर्ष आर्य समाज के सहयोग से आयोजित होता है।

इस अवसर पर स्वामी प्रणवानन्द जी के प्रवचन एवं श्री ओम प्रकाश वर्मा जी भजन हुए।

आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय ने स्वामी श्रद्धानन्द के व्यक्तित्व के बारे में कहा कि जैसे सूर्य अपना प्रकाश परमात्मा से ग्रहण करता है वैसे ही स्वामी श्रद्धानन्द ने अपनी तेजस्विता महर्षि दयानन्द के तेजस्वी व्यक्तित्व से ग्रहण किया।

डा. महेश विद्यालंकार ने सुझाव दिया कि आर्य समाज ग्रेटर कैलाश देश के प्रमुख समाजों में से एक है, जहाँ राष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कार्यक्रम होने चाहिये। श्री राजीव चौधरी ने बताया कि अंतर्राष्ट्रीय वैदिक संस्कृति का केन्द्र खोले जाने की योजना है जहाँ विद्वानों द्वारा समय समय पर शंका समाधान की सभायें आयोजित होंगी, गोष्ठियाँ, पुरोहितों का प्रशिक्षण व वैदिक साहित्य उपलब्धि आदि सुविधायें हो सकेंगी।

महाशय धर्मपाल जी ने आर्यसमाज में एल.ई.डी. पटल का अनावरण किया। इस कार्य के लिए श्रीमती रेणू जी एवं श्री राजीव चौधरी ने स्व. श्रीमती विमला खेर की पुण्य स्मृति में आर्थिक सहयोग प्रदान किया। इस कार्यक्रम का संचालन श्री वेद कुमार वेदालंकार जी ने किया। प्रधान जी श्री इन्द्र सैन साहनी सब महानुभावों का धन्यवाद दिया। *- मन्त्री*

प्रथम पृष्ठ का शेष

शाजापुर, गुना, सिहोर आदि स्थानों से रजिस्ट्रेशन कराए गये थे।

आर्य समाज जिला सभा कोटा द्वारा श्री प्रकाश आर्य के करकमलों द्वारा आर्य समाज मल्हारगंज के पदाधिकारियों को स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया गया। आर्य समाज मल्हारगंज द्वारा अर्जुनदेव चड्ढा, रामप्रसाद याज्ञिक, अरविन्द पाण्डे एवं श्री शिवराज वशिष्ठ का शॉल एवं श्रीफल से सम्मान किया गया।

अभी तक हुए सभी सम्मेलनों में सहभागी बने रामप्रसाद याज्ञिक (कोटा) ने बताया कि कार्यक्रम स्थल पर कई काउंटर बनाए गए थे जिसमें विशेषकर पूछताछ युवक-युवती तत्काल रजिस्ट्रेशन, बेच वितरण, डायरेक्ट्री वितरण आदि थे। डॉ. दक्षदेव गौड़ ने बताया कि इन स्टॉलों पर आर्य समाज मल्हारगंज की महिला सदस्यों जिसमें श्रीमती गीता आहलुवालिया, श्रीमती विमला गौड़, श्रीमती रेणु गुप्ता, श्रीमती अनिता गुप्ता, शशि गुप्ता ने कमान संभाल रखी थी। आर्य परिवारों को मिलाने हेतु एक समिति श्री गोविन्दराम आर्य की अध्यक्षता में बनाई गई थी। जिसमें श्री दिनेश गुप्ता, श्री रमेश गुप्ता, श्री रमेश गोयल, श्री प्रताप आर्य, श्री रमेश चौहान आदि ने परिवार को मिलाने के लिए अपनी अहम भूमिका निभाई। कार्यक्रम का कुशल संचालन अरविन्द पाण्डे (कोटा) ने किया।

आर्यसमाज बिडला लाइन्स के 84 वें स्थापना दिवस पर भजन संध्या

शनिवार 1 फरवरी, 2014

स्थान : आर्यसमाज बिड़ला लाइन, कमला नगर, दिल्ली-110007
यज्ञ : सायं 6 से 7 बजे
ब्रह्मा : आचार्य कुंवरपाल शास्त्री
भजन : श्री अंकित शास्त्री एवं साथी
प्रीतिभोज : रात्रि 9 बजे

आप सब अधिकाधिक संख्या में पहुंचकर कार्यक्रम को सफल बनाएं।

- योगेश कुमार आर्य, प्रधान

वैदिक विद्या मन्दिर अलवर में

19वां रोग निदान शिविर

9 फरवरी, 2014

आर्य कन्या विद्यालय समिति एवं श्रीरामजीलाल आर्य कन्या छात्रावास समिति के तत्त्वावधान में हरीश हॉस्पीटल के सौजन्य से 19वां रोग निदान शिविर मल्टी सुपर स्पेशियलिटी मेगा कैम्प का आयोजन 9 फरवरी को किया जा रहा है। पंजीकरण 1 से 5 फरवरी तक हरीश हॉस्पीटल अलवर में होंगे शिविर वैदिक विद्या मन्दिर स्वामी दयानन्द मार्ग, अलवर में आयोजित होगा। *- डॉ. हरीश गुप्ता, संयोजक*
मो. 09414022888

आर्यसमाज के गीतों की धुनें टाटा इंडिकॉम पर भी

Aai Fauj Dayaanand Wali	"WT1242047"
Hey Prabhu Hum Tumse	"WT1242048"
Hota Hai Saare Desh Ka	"WT1242049"
Humko Sab Duniya Jaane	"WT1242050"
Jo Holi So Holi	"WT1242051"
Pujniya Prabhu Humaare	"WT1242052"
Suno Suno Ae Duniya Waalo	"WT1242053"
Yun To Kitne Hi Mahapurush	"WT1242054"

अपने टाटा इंडिकॉम मोबाइल पर यदि आप इन गीतों की धुनों को अपनी कॉलर ट्यून बनाना चाहते हैं तो अपने मोबाइल से गीत का कोड नं. टाइप करके 12800 पर एसएमएस करें।

ब्रेल लिपि में
महर्षि दयानन्द जीवनी
मात्र 1000/-रु
ब्रेल लिपि में
सत्यार्थ प्रकाश
मात्र 2000/-रु

अपने क्षेत्र के नेत्रहीनों/अंध विद्यालयो को अपने आर्यसमाज की ओर से भेंट करें।

-: प्राप्ति स्थान :-
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.)

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का नया प्रचार वाहन सेवारत

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा एक नया प्रचार वाहन इको-कार्गो की व्यवस्था की गई है। यह प्रचार वाहन दिल्ली राष्ट्रीय राधानी क्षेत्र तथा आस-पास के क्षेत्रों में वेद प्रचार के कार्य के साथ-साथ आर्यसमाजों हवन सामग्री तथा वैदिक साहित्य पहुंचाएगा।

दिल्ली एवं आस-पास के समस्त आर्यसमाजों, आर्य शिक्षण संस्थाओं एवं सहायक संगठनों से निवेदन है कि वे इस प्रचार वाहन की सेवाएं लें। यदि आप अपने वार्षिकोत्सव, स्थापना दिवस या अन्य किसी उत्सव के अवसर पर वैदिक साहित्य के प्रचारार्थ स्टाल लगवाना चाहें तो भी इसकी सेवाएं श्री विजय आर्य (9540040339) पर सम्पर्क करके प्राप्त कर सकते हैं। *- विनय आर्य, महामन्त्री*

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज कालकाजी ए ब्लाक, नई दिल्ली-19

प्रधान : श्री रमेश गाड़ी
का. प्रधान : श्री रविन्द्र कुमार मुंजाल
मन्त्री : श्री राकेश भटनागर
कोषाध्यक्ष : श्री सुधीर मदान

आर्यसमाज ब्रह्मपुरी गौतमपुरी दिल्ली-53

प्रधान : श्री यादराम आर्य
मन्त्री : श्री अनिल टंडन (आर्य)
कोषाध्यक्ष : श्री महेन्द्र सिंह

स्त्री आर्यसमाज प्रशान्त विहार दिल्ली-85

प्रधान : श्रीमती सुरेश हसीजा
मन्त्री : श्रीमती अंजु जावा
कोषाध्यक्ष : श्रीमती कमलेश ग्रोवर

शोक समाचार

आचार्य वेद व्यास का निधन

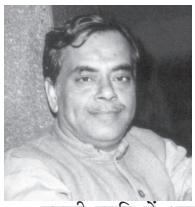

आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक पं. वेद व्यास आर्य जी का दिनांक 17 जनवरी को हृदयगति रुक जाने से देहावसान हो गया। वे 57 वर्ष के थे। वे शास्त्रार्थ महारथी अमर स्वामी जी के प्रिय शिष्य, आर्यसमाज के यशस्वी भजनोपदेशक एवं आर्यसमाज पंजाबीबाग के पुरोहित रहे। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से पंजाबी श्मशान घाट पर सम्पन्न हुआ।

उनकी स्मृति में श्रद्धांजलि सभा 20 जनवरी को आर्यसमाज पंजाबी बाग में सम्पन्न हुई, जिसमें अनेक आर्य समाजों के पदाधिकारियों ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

आचार्य वेद व्यास जी ने मरणोपरान्त नेत्रदान का संकल्प लिया था, उनकी इच्छानुसार परिजनों उनके नेत्रों का दान किया गया, जिससे दो नेत्रहीनों के जीवन में प्रकाश हो सकेगा।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पंजी.) में
गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी के उत्पाद उपलब्ध

1. आंवला कैंडी 500 ग्राम (सूखा मुरब्बा) 1 किलो	160/- 286/-	9. सफेद सुरमा 1/2 ग्राम	32/-
2. च्यवनप्राश स्पेशल 1 किलो	294/-	10. महाभृंगराज तेल 250ग्राम	206/-
3. गुरुकुल चाय 400 ग्राम	201/-	11. आंवला रस 1 लीटर	154/-
4. गुरुकुल चाय 200 ग्राम	111/-	12. मधुमेहनाशिनी 50 ग्रा.	259/-
5. गुरुकुल चाय 100 ग्राम	61/-		
6. गुलकन्द 250 ग्राम	114/-		
7. पायोकिल मंजन 60 ग्राम	88/-		
8. पायोकिल मंजन 25 ग्राम	42/-		

सभी उपलब्ध उत्पादों पर 10% की आकर्षक छूट। प्राप्त करने/अधिक जानकारी के लिए 9540040339 पर श्री विजय आर्य जी से सम्पर्क करें।

- महामन्त्री

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 20 जनवरी, 2014 से रविवार 26 जनवरी, 2014

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)–11/6071/2012–13–14

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 23/24 जनवरी, 2014

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2012–14

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 22 जनवरी, 2014

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय में

लोहड़ी–मकर संक्रान्ति यज्ञ एवं मॉरीशस आर्य सभा के उप प्रधान श्री सत्यदेव प्रीतम का स्वागत

प्रतिष्ठा में,

दैनिक याज्ञिकों/आर्यसमाजों के लिए खुशखबरी

MDH हवन सामग्री

मात्र 70/– किलो (5,10,20 किलो की पैकिंग)

अब 1 किलो एवं आधा किलो की पैकिंग में भी उपलब्ध

प्राप्ति स्थान — दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 110001, दूरभाष - 23360150

पारिवारिक मिलन पिकनिक का आयोजन

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी सभा अधिकारियों के पारिवारिक परिचय समारोह (पिकनिक) का आयोजन 26 जनवरी को किया जा रहा है। सभा के समस्त माननीय अधिकारियों से निवेदन है कि जो इसमें भाग लेना चाहें वे सभा उप प्रधान एवं संयोजक **श्री ओम प्रकाश आर्य जी से 954004077858/9911155285से सम्पर्क करें।**

– विनय आर्य, महामन्त्री

वैदिक शगुन लिफाफे

महर्षि दयानन्द के चित्र एवं वेदमन्त्रों सहित सुन्दर डिजाइनों में

सिक्के वाले	बिना सिक्के
मात्र 400/–रु. सैकड़ा	मात्र 300/–रु. सैकड़ा

आर्यजगत् का सुप्रसिद्ध चलचित्र

सत्य की राह

Vedic Path to Absolute Truth

मात्र 30/– रु.

हिन्दी एवं अंग्रेजी दोनों भाषाओं में उपलब्ध

–: प्राप्ति स्थान :–

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड,नई दिल्ली

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक ब्र0 राजसिंह आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए हरि हर प्रैस, ए–29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र–1, नई दिल्ली–28 से छपवाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान रोड, नई दिल्ली–1; टैलीफैक्स : 23360150; 23365959; IVRS : 011-23488888 E-mail : aryasabha@yahoo.com से प्रकाशित किया।

सम्पादक : ब्र0 राजसिंह आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर